

॥ गोस्वामी तुलसीदास कृत दोहावली ॥

॥ राम ॥

॥ श्री हनुमते नमः ॥

दो०

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाये । श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्रत्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहु को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनो लोक हाँक ते काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहि आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुडावैं । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारो जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महासुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दो०

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति ॥

सियावर रामचन्द्र की जय । पवनसुत हनुमान की जय ॥
उमापति महादेव की जय । बोलो भाइ सब संतन्ह की जय ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

दोहावली

ध्यान

राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्याणमय सुरतरु तुलसी तोर ॥
सीता लखन समेत प्रभु सोहत तुलसीदास ।
हरषत सुर बरषत सुमन सगुन सुमंगल बास ॥
पंचबटी बट बिटप तर सीता लखन समेत ।
सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत ॥

राम-नाम-जपकी महिमा

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय लखन समेत ।

राम नाम जप जापकहि तुलसी अभिमत देत ॥
 पय अहार फल खाइ जपु राम नाम षट मास ।
 सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास ॥
 राम नाम मनीदीप धरु जीह देहरी द्वार ।
 तुलसी भीतर बाहरेहुँ जौ चाहसि उजियार ॥
 हियँ निर्गुन नयनन्हि सगुन रसना राम सुनाम ।
 मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम ॥
 सगुन ध्यान रुचि सरस नहिं निर्गुन मन ते दूरि ।
 तुलसी सुमिरहु रामको नाम सजीवन मूरि ॥
 एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।
 तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥
 नाम राम को अंक है सब साधन हैं सून ।
 अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गून ॥
 नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।
 जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥
 राम नाम जपि जीहँ जन भए सुकृत सुखसालि ।
 तुलसी इहाँ जो आलसी गयो आजु की कालि ॥
 नाम गरीबनिवाज को राज देत जन जानि ।
 तुलसी मन परिहरत नहिं घुर बिनिआ की बानि ॥
 कासीं बिधि बसि तनु तजें हठि तनु तजें प्रयाग ।
 तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग ॥
 मीठो अरु कठवति भरो रौताई अरु छैम ।
 स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम ॥
 राम नाम सुमिरत सुजस भाजन भए कुजाति ।
 कुतरुक सुरपुर राजमग लहत भुवन बिख्याति ॥
 स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम परमारथ न प्रबेस ।
 राम नाम सुमिरत मिटहिं तुलसी कठिन कलेस ॥
 मोर मोर सब कहँ कहसि तू को कहु निज नाम ।
 कै चुप साधहि सुनि समुझि कै तुलसी जपु राम ॥
 हम लखि लखहि हमार लखि हम हमार के बीच ।
 तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जप नीच ॥
 राम नाम अवलंब विनु परमारथ की आस ।
 बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास ॥
 तुलसी हठि हठि कहत नित चित सुनि हित करि मानि ।
 लाभ राम सुमिरन बड़ो बड़ी बिसारें हानि ॥
 बिगरी जनम अनेक की सुधरै अबहीं आजु ।
 होहि राम को नाम जपु तुलसी तजि कुसमाजु ॥

प्रीति प्रतीति सुरीति सों राम राम जपु राम ।
 तुलसी तेरो है भलो आदि मध्य परिनाम ॥
 दंपति रस रसना दसन परिजन बदन सुगेह ।
 तुलसी हर हित बरन सिसु संपति सहज सनेह ॥
 बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
 रामनाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥
 राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलिकाल ।
 जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥

राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु ।
 सकल सुमंगल मूल जग गुरुपद पंकर रेनु ॥
 राम नाम कलि कामतरु सकल सुमंगल कंद ।
 सुमिरत करतल सिद्धि सब पग पग परमानंद ॥
 जथा भूमि सब बीजमय नखत निवास अकास ।
 राम नाम सब धरममय जानत तुलसीदास ॥
 सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।
 नाम सुप्रेम पियूष हृद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि ।
 राम चरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥
 सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
 नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥
 राम नाम पर नाम तें प्रीति प्रतीति भरोस ।
 सो तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगल कोस ॥
 लंक बिभीषन राज कपि पति मारुति खग मीच ।
 लही राम सों नाम रति चाहत तुलसी नीच ॥
 हरन अमंगल अघ अखिल करन सकल कल्यान ।
 रामनाम नित कहत हर गावत बेद पुरान ॥

तुलसी प्रीति प्रतीति सों राम नाम जप जाग ।
 किएँ होइ बिधि दाहिनो देइ अभागोहि भाग ॥
 जल थल नभ गति अमित अति अग जग जीव अनेक ।
 तुलसी तो से दीन कहँ राम नाम गति एक ॥
 राम भरोसो राम बल राम नाम बिस्वास ।
 सुमिरत सुभ मंगल कुसल माँगत तुलसीदास ॥
 राम नाम रति राम गति राम नाम बिस्वास ।
 सुमिरत सुभ मंगल कुसल दुहुँ दिसि तुलसीदास ॥

रामप्रेमके बिना सब व्यर्थ है

रसना साँपिनि बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम ।
 तुलसी प्रेम न राम सों ताहि बिधाता वाम ॥
 हिय फाटहुँ फूटहुँ नयन जरउ सो तन केहि काम ।
 द्रवहिं स्त्रवहिं पुलकइ नहीँ तुलसी सुमिरत राम ॥
 रामहि सुमिरत रन भिरत देत परत गुरु पाँय ।
 तुलसी जिन्हहि न पुलक तनु ते जग जीवत जायँ ॥

सोरठा

हृदय सो कुलिस समान जो न द्रवइ हरिगुन सुनत ।
 कर न राम गुन गान जीह सो दादुर जीह सम ॥
 स्त्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर जस ।
 ते नयना जनि देहु राम करहु बरु आँधरो ॥
 रहैं न जल भरि पूरि राम सुजस सुनि रावरो ।
 तिन आँखिन में धूरि भरि भरि मूठी मेलिये ॥

प्रार्थना

बारक सुमिरत तोहि होहि तिन्हहि सम्मुख सुखद ।
क्यों न सँभारहि मोहि दया सिंधु दसरत्थ के ॥

रामकी और रामप्रेमकी महिमा

साहिब होत सरोष सेवक को अपराध सुनि ।
अपने देखे दोष सपनेहु राम न उर धरे ॥

दोहा

तुलसी रामहि आपु तें सेवक की रुचि मीठि ।
सीतापति से साहिबहि कैसे दीजै पीठि ॥
तुलसी जाके होयगी अंतर बाहिर दीठि ।
सो कि कृपालुहि देइगो केवटपालहि पीठि ॥
प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सील निधान ॥

उद्धोधन

रे मन सब सों निरस है सरस राम सों होहि ।
भलो सिखावन देत है निसि दिन तुलसी तोहि ॥
हरे चरहिं तापहि बरे फरें पसारहिं हाथ ।
तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ ॥
स्वारथ सीता राम सों परमारथ सिय राम ।
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा कहु काम ॥
स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एक ही ओर ।
द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥
तुलसी स्वारथ राम हित परमारथ रघुबीर ।
सेवक जाके लखन से पवनपूत रनधीर ॥
ज्यों जग बैरी मीन को आपु सहित बिनु बारि ।
त्योँ तुलसी रघुबीर बिनु गति आपनी बिचारि ॥

तुलसीदासजीकी अभिलाषा

राम प्रेम बिनु दूबरो राम प्रेमहीं पीन ।
रघुबर कबहुँक करहुगे तुलसिहि ज्यों जल मीन ॥

रामप्रेमकी महत्ता

राम सनेही राम गति राम चरन रति जाहि ।
तुलसी फल जग जनम को दियो बिधाता ताहि ॥
आपु आपने तें अधिक जेहि प्रिय सीताराम ।
तेहि के पग की पानही तुलसी तनु को चाम ॥

स्वारथ परमारथ रहित सीता राम सनेहँ ।
तुलसी सो फल चारि को फल हमार मत एहँ ॥
जे जन रूखे बिषय रस चिकने राम सनेहँ ।
तुलसी ते प्रिय राम को कानन बसहि कि गेहँ ॥
जथा लाभ संतोष सुख रघुबर चरन सनेह ।
तुलसी जो मन खूँद सम कानन बसहुँ कि गेह ॥
तुलसी जौ पै राम सों नाहिन सहज सनेह ।
मूँड़ मुड़ायो बादिहीं भाँड़ भयो तजि गेह ॥

रामविमुखताका कुफल

तुलसी श्रीरघुबीर तजि करै भरोसो और ।
सुख संपति की का चली नरकहुँ नाहीं ठौर ॥
तुलसी परिहरि हरि हरहि पाँवर पूजहिं भूत ।
अंत फजीहत होहिंगे गनिका के से पूत ॥
सेये सीता राम नहिं भजे न संकर गौरि ।
जनम गँवायो बादिहीं परत पराई पौरि ॥
तुलसी हरि अपमान तें होइ अकाज समाज ।
राज करत रज मिलि गए सदल सकुल कुरुराज ॥
तुलसी रामहि परिहरें निपट हानि सुन ओझ ।
सुरसरि गत सोई सलिल सुरा सरिस गंगोझ ॥
राम दूरि माया बढ़ति घटति जानि मन माँह ।
भूरि होति रबि दूरि लखि सिर पर पगतर छाँह ॥
साहिब सीतानाथ सों जब घटिहै अनुराग ।
तुलसी तबही भालतें भभरि भागिहैं भाग ॥
करिहौ कोसलनाथ तजि जबहिं दूसरी आस ।
जहाँ तहाँ दुख पाइहौ तबही तुलसीदास ॥
बिंधि न ईधन पाइए सागर जुँरे न नीर ।
परै उपास कुबेर घर जो बिपच्छ रघुबीरो ॥
बरसा को गोबर भयो को चहै को करै प्रीति ।
तुलसी तू अनुभवहि अब राम बिमुख की रीति ॥
सबहिं समरथहि सुखद प्रिय अच्छम प्रिय हितकारि ।
कबहुँ न काहुहि राम प्रिय तुलसी कहा बिचारि ॥
तुलसी उद्यम करम जुग जब जेहि राम सुडीठि ।
होइ सुफल सोइ ताहि सब सनमुख प्रभु तन पीठि ॥
राम कामतरु परिहरत सेवत कलि तरु टूँठ ।
स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ झूँठ ॥

कल्याणका सुगम उपाय

निज दूषन गुन राम के समुझें तुलसीदास ।
होइ भलो कलिकाल हूँ उभय लोक अनयास ॥
कै तोहि लागहिं राम प्रिय कै तू प्रभु प्रिय होहि ।
दुइ में रुचे जो सुगम सो कीबे तुलसी तोहि ॥
तुलसी दुइ महँ एक ही खेल छाँड़ि छल खेनु ।
कै करु ममता राम सों के ममता परहेलु ॥

श्रीरामजीकी प्राप्तिका सुगम उपाय

निगम अगम साहेब सुगम राम साँचिली चाह ।
अंबु असन अवलोकित सुलभ सबै जग माँह ॥
सनमुख आवत पथिक ज्यों दिऐँ दाहिनो बाम ।
तैसोइ होत सु आप को त्यों ही तुलसी राम ॥

रामप्रेमके लिये वैराग्यकी आवश्यकता

राम प्रेम पथ पेखिए दिऐँ बिषय तन पीठि ।
तुलसी केंचुरि परिहरें होत साँपहू दीठि ॥
तुलसी जौ लौ बिषय की मुधा माधुरी मीठि ।
तौ लौ सुधा सहस्त्र सम राम भगति सुठि सीठि ॥

शरणागतिकी महिमा

जैसो तैसो रावरो केवल कोसलपाल ।
तौ तुलसी को है भलो तिहूँ लोक तिहूँ काल ॥
है तुलसी कें एक गुन अवगुन निधि कहैं लोग ।
भलो भरोसो रावरो राम रीझिबे जोग ॥

भक्तिका स्वरूप

प्रीति राम सों नीति पथ चलिय राग रिस जीति ।
तुलसी संतन के मते इहै भगति की रीति ॥

कलियुगसे कौन नहीं छला जाता

सत्य बचन मानस विमल कपट रहित करतूति ।
तुलसी रघुबर सेवकहि सकै न कलिजुग धूति ॥
तुलसी सुखी जो राम सों दुखी सो निज करतूति ।
करम बचन मन ठीक जेहि तेहि न सकै कलि धूति ॥

गोस्वामीजीकी प्रेम-कामना

नातो नाते राम कें राम सनेहूँ सनेहु ।
तुलसी माँगत जोरि कर जनम जनम सिव देहु ॥
सब साधनको एक फल जेहिं जान्यो सो जान ।
ज्यों त्यों मन मंदिर बसहिं राम धरें धनु बान ॥
जौ जगदीस तौ अति भलो जौ महीस तौ भाग ।
तुलसी चाहत जनम भरि राम चरन अनुराग ॥
परौ नरक फल चारि सिसु मीच डाकिनी खाउ ।
तुलसी राम सनेह को जो फल सो जरि जाउ ॥

रामभक्तके लक्षण

हित सों हित, रति राम सों, रिपु सों बैर बिहाउ ।
उदासीन सब सों सरल तुलसी सहज सुभाउ ॥
तुलसी ममता राम सों समता सब संसार ।
राग न रोष न दोष दुख दास भए भव पार ॥

उद्धोधन

रामहि डरु करु राम सों ममता प्रीति प्रतीति ।
तुलसी निरुपधि राम को भएँ हारेहूँ जीति ॥
तुलसी राम कृपालु सों कहि सुनाउ गुन दोष ।
होय दूबरी दीनता परम पीन संतोष ॥
सुमिरन सेवा राम सों साहब सों पहिचानि ।
ऐसेहु लाभ न ललक जो तुलसी नित हित हानि ॥
जाने जानन जोइए बिनु जाने को जान ।
तुलसी यह सुनि समुझि हियँ आनु धरें धनु बान ॥
करमठ कठमलिया कहैं ग्यानी ग्यान बिहीन ।
तुलसी त्रिपथ बिहाइ गो राम दुआरें दीन ॥
बाधक सब सब के भए साधक भए न कोइ ।
तुलसी राम कृपालु तें भलो होइ सो होइ ॥

शिव और रामकी एकता

संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास ॥
बिलग बिलग सुख संग दुख जनम मरन सोइ रीति ।
रहिअत राखे राम कें गए ते उचित अनीति ॥

रामप्रेमकी सर्वोत्कृष्टता

जाँय कहब करतूति बिनु जायँ जोग बिन छेम ।
तुलसी जायँ उपाय सब बिना राम पद प्रेम ॥
लोग मगन सब जोगही जोग जाँय बिनु छेम ।
त्यों तुलसीके भावगत राम प्रेम बिनु नेम ॥

श्रीरामकी कृपा

राम निकाई रावरी है सबही को नीक ।
जौ यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥
तुलसी राम जो आदर्यो खोटो खरो खरोइ ।
दीपक काजर सिर धर्यो धर्यो सुधर्यो धरोइ ॥
तनु बिचित्र कायर बचन अहि अहार मन घोर ।
तुलसी हरि भए पच्छधर ताते कह सब मोर ॥
लहइ न फूटी कौड़िहू को चाहै केहि काज ।
सो तुलसी महँगो कियो राम गरीब निवाज ॥
घर घर माँगे टूक पुनि भूपति पूजे पाय ।

जे तुलसी तब राम बिनु ते अब राम सहाय ॥
तुलसी राम सुदीठि तें निबल होत बलवान ।
बैर बालि सुग्रीव कें कहा कियो हनुमान ॥
तुलसी रामहु तें अधिक राम भगत जियँ जान ।
रिनिया राजा राम भे धनिक भए हनुमान ॥
कियो सुसेवक धरम कपि प्रभु कृतग्य जियँ जानि ।
जोरि हाथ ठाढ़े भए बरदायक बरदानि ॥
भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥
ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।
सोइ सच्चिदानंदघन कर नर चरित उदार ॥
हिरन्याच्छ्र भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥

भगवान् की बाललीला

बाल बिभूषन बसन बर धूरि धूसरित अंग ।
बालकेलि रघुबर करत बाल बंधु सब संग ॥
अनुदिन अवध बधावने नित नव मंगल मोद ।
मुदित मातु पितु लोग लखि रघुबर बाल बिनोद ॥
राज अजिर राजत रुचिर कोसलपालक बाल ।
जानु पानि चर चरित बर सगुन सुमंगल माल ॥
नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ ।
ललित बसन भूषन ललित ललित अनुज सिसु साथ ॥
राम भरत लच्छिमन ललित सत्रु समन सुभ नाम ।
सुमिरत दसरथ सुवन सब पूजहिं सब मन काम ॥
बालक कोसलपाल के सेवकपाल कृपाल ।
तुलसी मन मानस बसत मंगल मंजु मराल ॥
भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जगजाल ॥
निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।
सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥

प्रार्थना

परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥

भजनकी महिमा

बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥
हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं ।
भजिअ राम सब काम तजि अस बिचारि मन माहिं ॥

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥
श्रीरघुवीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण ।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥
लव निमेष परमानु जुग बरस कल्प सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ कालु जासु कोदंड ॥
तब लगि कुसल न जीव कहँ सपनेहुँ मन विश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहँ सोकधाम तजि काम ॥
बिनु सतसंग न हरिकथा तेहिं बिनु मोह न भाग ।
मोह गएँ बिनु रामपद होइ न दृढ अनुराग ॥
बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न ल विश्रामु ॥

सोरठा

अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुवीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥
भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन ॥
कहहिं बिमलमति संत बेद पुरान बिचारि अस ।
द्रवहिं जानकी कंत तब छूटै संसार दुख ॥
बिनु गुरु होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥

दोहा

रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान ॥
जरउ सो संपति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ।
सनमुख होत जो रामपद करइ न सहस सहाइ ॥
सेइ साधु गुरु समुझि सिखि राम भगति थिरताइ ।
लरिकाई को पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ ॥

रामसेवककी महिमा

सबइ कहावत राम के सबहि राम की आस ।
राम कहहिं जेहि आपनो तेहि भजु तुलसीदास ॥
जेहि सरीर रति राम सों सोइ आदरहिं सुजान ।
रुद्रदेह तजि नेहबस बानर भे हनुमान ॥
जानि राम सेवा सरस समुझि करब अनुमान ।
पुरुषा ते सेवक भए हर ते भे हनुमान ॥
तुलसी रघुबर सेवकहि खल डाटत मन माखि ।
बाजराज के बालकहि लवा दिखावत आँखि ॥
रावन रिपुके दास तें कायर करहिं कुचालि ।
खर दूषन मारीच ज्यों नीच जाहिंगे कालि ॥
पुन्य पाप जस अजस के भावी भाजन भूरि ।

संकट तुलसीदास को राम करहिंगे दूरि ॥
खेलत बालक ब्याल सँग मेलत पावक हाथ ।
तुलसी सिसु पितु मातु ज्यों राखत सिय रघुनाथ ॥
तुलसी दिन भल साहु कहँ भली चोर कहँ राति ।
निसि बासर ता कहँ भलो मानै राम इताति ॥

राम महिमा

तुलसी जाने सुनि समुझि कृपासिंधु रघुराज ।
महँगे मनि कंचन किए सौधे जग जल नाज ॥

रामभजनकी महिमा

सेवा सील सनेह बस करि परिहरि प्रिय लोग ।
तुलसी ते सब राम सों सुखद सँजोग बियोग ॥
चारि चहत मानस अगम चनक चारि को लाहु ।
चारि परिहरें चारि को दानि चारि चख चाहु ॥

रामप्रेमकी प्राप्ति सुगम उपाय

सूधे मन सूधे बचन सूधी सब करतूति ।
तुलसी सूधी सकल विधि रघुबर प्रेम प्रसूति ॥

रामप्राप्तिमें बाधक

बेष बिसद बोलनि मधुर मन कटु करम मलीन ।
तुलसी राम न पाइऐ भएँ बिषय जल मीन ॥
बचन बेष तें जो बनइ सो बिगरइ परिनाम ।
तुलसी मन तें जो बनइ बनी बनाई राम ॥

राम अनुकूलतामें ही कल्याण है

नीच मीचु लै जाइ जो राम रजायसु पाइ ।
तौ तुलसी तेरो भलो न तु अनभलो अघाइ ॥

श्रीरामकी शरणागतवत्सलता

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि ।
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥
बंधु बंधू रत कहि कियो बचन निरुत्तर बालि ।
तुलसी प्रभु सुग्रीव की चितइ न कछु कुचालि ॥
बालि बली बलसालि दलि सखा कीन्हि कपिराज ।
तुलसी राम कृपालु को बिरद गरीब निवाज ॥
कहा बिभीषन लै मिल्यो कहा बिगार्यो बालि ।
तुलसी प्रभु सरनागतहि सब दिन आए पालि ॥
तुलसी कोसलपाल सो को सरनागत पाल ।

भज्यो बिभीषन बंधु भय भंज्यो दारिद काल ॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु चाहि ॥
बलकल भूषन फल असन तून सज्या द्रुम प्रीति ।
तिन्ह समयन लंका दई यह रघुबर की रीति ॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिऐँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥
अबिचल राज बिभीषनहि दीन्ह राम रघुराज ।
अजहुँ बिराजत लंक पर तुलसी सहित समाज ॥
कहा बिभीषन लै मिल्यो कहा दियो रघुनाथ ।
तुलसी यह जाने बिना मूढ़ मीजिहँ हाथ ॥
बैरि बंधु निसिचर अधम तज्यो न भरें कलंक ।
झूठें अघ सिय परिहरी तुलसी साईँ ससंक ॥
तेहि समाज कियो कठिन पन जेहिं तौल्यो कैलास ।
तुलसी प्रभु महिमा कहौँ सेवक को बिस्वास ॥
सभा सभासद निरखि पट पकरि उठायो हाथ ।
तुलसी कियो इगारहों बसन बेस जदुनाथ ॥
त्राहि तीनि कह्यो द्रौपदी तुलसी राज समाज ।
प्रथम बढे पट बिय बिकल चहत चकित निज काज ॥
सुख जीवन सब कोउ चहत सुख जीवन हरि हाथ ।
तुलसी दाता माग्नेउ देखिअत अबुध अनाथ ॥
कृपन देइ पाइअ परो बिनु साधें सिधि होइ ।
सीतापति सनमुख समुझि जौ कीजै सुभ सोइ ॥
दंडक बन पावन करन चरन सरोज प्रभाउ ।
ऊसर जामहिं खल तरहिं होइ रंक ते राउ ॥
बिनहिं रितु तरुबर फरत सिला द्रवहि जल जोर ।
राम लखन सिय करि कृपा जब चितवत जेहि ओर ॥
सिला सुतिय भइ गिरि तरे मृतक जिऐ जग जान ।
राम अनुग्रह सगुन सुभ सुलभ सकल कल्याण ॥
सिला साप मोचन चरन सुमिरहु तुलसीदास ।
तजहु सोच संकट मिटिहिं पूजहि मनकी आस ॥
मुए जिआए भालु कपि अवध बिप्रको पूत ।
सुमिरहु तुलसी ताहि तू जाको मारुति दूत ॥

प्रार्थना

काल करम गुन दोर जग जीव तिहारे हाथ ।
तुलसी रघुबर रावरो जानु जानकीनाथ ॥
रोग निकर तनु जरठपनु तुलसी संग कुलोग ।
राम कृपा लै पालिए दीन पालिबे जोग ॥
मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥
भव भुअंग तुलसी नकुल डसत ग्यान हरि लेत ।
चित्रकूट एक औषधी चितवत होत सचेत ॥
हौहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥

रामराज्यकी महिमा

राम राज राजत सकल धरम निरत नर नारि ।
राग न रोष न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि ॥
राम राज संतोष सुख घर बन सकल सुपास ।
तरु सुरतरु सुरधेनु महि अभिमत भोग विलास ॥
खेती बनि बिद्या बनिज सेवा सिलिप सुकाज ।
तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफल राम कें राज ॥
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहिं सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ॥
कोपें सोच न पोच कर करिअ निहोर न काज ।
तुलसी परमिति प्रीति की रीति राम कें राज ॥

श्रीरामकी दयालुता

मुकुर निरखि मुख राम भू गनत गुनहि दै दोष ।
तुलसी से सठ सेवकन्हि लखि जनि परहिं सरोष ॥

श्रीरामकी धर्मधुरन्धरता

सहसनाम मुनि भनित सुनि तुलसी बल्लभ नाम ।
सकुचित हियँ हँसि निरखि सिय धरम धुरंधर राम ॥

श्रीसीताजीका अलौकिक प्रेम

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।
मन विहँसे रघुवंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥

श्रीरामकी कीर्ति

तुलसी बिलसत नखत निसि सरद सुधाकर साथ ।
मुकुता झालरि झलक जनु राम सुजसु सिसु हाथ ॥
रघुपति कीरति कामिनी क्यों कहै तुलसीदासु ।
सरद अकास प्रकास ससि चारु चिबुक तिल जासु ॥
प्रभु गुन गन भूषन बसन बिसद बिसेष सुबेस ।
राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतब केस ॥
राम चरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु ॥
रघुबर कीरति सज्जननि सीतल खलनि सुताति ।
ज्यों चकोर चय चक्कवनि तुलसी चाँदनि राति ॥

रामकथाकी महिमा

राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥
हरि हर जस सुर नर गिरहुँ बरनहिं सुकवि समाज ।
हाँड़ी हाटक घटित चरु राँधे स्वाद सुनाज ॥

राममहिमाकी अज्ञेयता

तिल पर राखेउ सकल जग विदित बिलोकत लोग ।
तुलसी महिमा राम की कौन जानिबे जोग ॥

श्रीरामजीके स्वरूपकी अलौकिकता

सोरठा

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥

ईश्वर-महिमा

दोहा

माया जीव सुभाव गुन काल करम महदादि ।
ईस अंक तें बढ़त सब ईस अंक बिनु बादि ॥

श्रीरामजीकी भक्तवत्सलता

हित उदास रघुबर बिरह बिकल सकल नर नारि ।
भरत लखन सिय गति समुझि प्रभु चख सदा सुवारि ॥

सीता, लक्ष्मण और भरतके रामप्रेमकी अलौकिकता

सीय सुमित्रा सुवन गति भरत सनेह सुभाउ ।
कहिबे को सारद सरस जनिबे को रघुराउ ॥
जानि राम न कहि सके भरत लखन सिय प्रीति ।
सो सुनि गुनि तुलसी कहत हठ सठता की रीति ॥
सब बिधि समरथ सकल कह सहि साँसति दिन राति ।
भलो निबाहेउ सुनि समुझि स्वामिधर्म सब भाँति ॥

भरत-महिमा

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरिहर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥
संपति चकई भरत चक मुनि आयस खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार ॥
सधन चोर मग मुदित मन धनी गही ज्यों फेंट ।
त्योँ सुग्रीव बिभीषनहिं भई भरतकी भेंट ॥

राम सराहे भरत उठि मिले राम सम जानि ।
तदपि बिभीषन कीसपति तुलसी गरत गलानि ॥
भरत स्याम तन राम सम सब गुन रूप निधान ।
सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब कल्याण ॥

लक्ष्मणमहिमा

ललित लखन मूरति मधुर सुमिरहु सहित सनेह ।
सुख संपति कीरति बिजय सगुन सुमंगल गेह ॥

शत्रुघ्नमहिमा

नाम सत्रुसूदन सुभग सुषमा सील निकेत ।
सेवत सुमिरत सुलभ सुख सकल सुमंगल देत ॥

कौसल्यामहिमा

कौसल्या कल्याणमइ मूरति करत प्रनाम ।
सगुन सुमंगल काज सुभ कृपा करहिं सियाराम ॥

सुमित्रामहिमा

सुमिरि सुमित्रा नाम जग जे तिय लेहिं सनेम ।
सुअन लखन रिपुदवन से पावहिं पति पद प्रेम ॥

सीतामहिमा

सीताचरन प्रनाम करि सुमिरि सुनाम सुनेम ।
होहिं तीय पतिदेवता प्राननाथ प्रिय प्रेम ॥

रामचरित्रकी पवित्रता

तुलसी केवल कामतरु रामचरित आराम ।
कलितरु कपि निसिचर कहत हमहिं किए बिधि बाम ॥

कैकेयीकी कुटिलता

मातु सकल सानुज भरत गुरु पुर लोग सुभाउ ।
देखत देख न कैकइहि लंकापति कपिराउ ॥
सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥

दशरथमहिमा

दसरथ नाम सुकामतरु फलइ सकलो कल्याण ।
धरनि धाम धन धरम सुत सदगुन रूप निधान ॥

तुलसी जान्यो दसरथहिं धरमु न सत्य समान ।
रामु तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान ॥
राम बिरहँ दसरथ मरन मुनि मन अगम सुमीचु ।
तुलसी मंगल मरन तरु सुचि सनेह जल सीचु ॥

सोरठा

जीवन मरन सुनाम जैसें दसरथ राय को ।
जियत खिलाए राम राम बिरहँ तनु परिहरेउ ॥

जटायुका भाग्य

दोहा

प्रभुहि बिलोकत गोद गत सिय हित घायल नीचु ।
तुलसी पाई गीधपति मुकुति मनोहर मीचु ॥
बिरत करम रत भगत मुनि सिद्ध ऊँच अरु नीचु ।
तुलसी सकल सिहात सुनि गीधराज की मीचु ॥
मुए मरत मरिहँ सकल घरी पहरके बीचु ।
लही न काहँ आजु लौं गीधराज की मीचु ॥
मुँए मुकुत जीवत मुकुत मुकुत मुकुत हँ बीचु ।
तुलसी सबही तें अधिक गीधराज की मीचु ॥
रघुबर बिकल बिहंग लखि सो बिलोकि दोउ बीर ।
सिय सुधि कहि सियल राम कहि देह तजी मति धीर ॥
दसरथ तें दसगुन भगति सहित तासु करि काजु ।
सोचत बंधु समेत प्रभु कृपासिंधु रघुराजु ॥

रामकृपाकी महत्ता

केवट निसिचर बिहग मृग किए साधु सनमानि ।
तुलसी रघुबर की कृपा सकल सुमंगल खानि ॥

हनुमत्स्मरणकी महत्ता

मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुत पूत ।
सकल सिद्धि कर कमल तल सुमिरत रघुबर दूत ॥
धीर बीर रघुबीर प्रिय सुमिरि समीर कुमार ।
अगम सुगम सब काज करु करतल सिद्धि बिचारु ॥
सुख मुद मंगल कुमुद बिधु सुगुन सरोरुह भानु ।
करहु काज सब सिद्धि सुभ आनि हिउँ हनुमानु ॥
सकल काज सुभ समउ भल सगुन सुमंगल जानु ।
कीरति बिजय बिभूति भलि हियँ हनुमानहि आनु ॥
सूर सिरोमनि साहसी सुमति समीर कुमार ।
सुमिरत सब सुख संपदा मुद मंगल दातार ॥

बाहुपीड़ाकी शान्तिके लिये प्रार्थना

तुलसी तनु सर सुख जलज भुज रुज गज बरजोर ।
दलत दयानिधि देखिए कपि केसरी किसोर ॥
भुज तरु कोटर रोग अहि बरबस कियो प्रबेस ।
बिहगराज बाहन तुरत काढ़िअ मिटै कलेस ॥
बाहु बिटप सुख बिहंग थलु लगी कुपीर कुआगि ।
राम कृपा जल सीचिऐ बेगि दीन हित लागि ॥

काशीमहिमा

सोरठा

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर ।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥

शंकरमहिमा

जरत सकल सुर वृंद बिषम गरल जेहिं पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपालु संकर सरिस ॥

शंकरजीसे प्रार्थना

दोहा

बासर ढासनि के ढका रजनी चहुँ दिसि चोर ।
संकर निज पुर राखिए चितै सुलोचन कोर ॥
अपनी बीसी आपुहीं पुरिहिं लगाए हाथ ।
केहि बिधि बिनती बिस्व की करौ बिस्व के नाथ ॥

भगवल्लीलाकी दुर्जेयता

और करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ॥

प्रेममें प्रपञ्च बाधक है

प्रेम सरीर प्रपंच रुज उपजी अधिक उपाधि ।
तुलसी भली सुबैदई बेगि बाँधिऐ ब्याधि ॥

अभिमान ही बन्धनका मूल है

हम हमार आचार बड़ भूरि भार धरि सीस ।
हठि सठ परबस परत जिमि कीर कोस कृमि कीस ॥

जीव और दर्पणके प्रतिबिम्बकी समानता

केहिं मग प्रबिसति जाति केहिं कहु दरपनमें छाहँ ।
तुलसी ज्यो जग जीव गति करि जीव के नाहँ ॥

भगवन्मायाकी दुर्जेयता

सुखसागर सुख नींद बस सपने सब करतार ।
माया मायानाथ की को जग जाननिहार ॥

जीवकी तीन दशाएँ

जीव सीव सम सुख सयन सपनें कछु करतूति ।
जागत दीन मलीन सोइ बिकल बिषाद बिभूति ॥

सृष्टि स्वप्नवत् है

सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥

हमारी मृत्यु प्रतिक्षण हो रही है

तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच ।
चपरि चपेटे देत नित केस गहें कर मीच ॥

कालकी करतूत

करम खरी कर मोह थल अंक चराचर जाल ।
हनत गुनत गनि गुनि हनत जगत ज्यौतिषी काल ॥

इन्द्रियोंकी सार्थकता

कहिबे कहँ रसना रची सुनिबे कहँ किये कान ।
धरिबे कहँ चित हित सहित परमारथहि सुजान ॥

सगुणके बिना निर्गुणका निरूपण असम्भव है

ग्यान कहै अग्यान बिनु तम बिनु कहै प्रकास ।
निरगुन कहै जो सगुन बिनु सो गुरु तुलसीदास ॥

निर्गुणकी अपेक्षा सगुण अधिक प्रामाणिक है

अंक अगुन आखर सगुन समुझिअ उभय प्रकार ।
खोएँ राखें आपु भल तुलसी चारु बिचार ॥

विषयासक्तिका नाश हुए बिना ज्ञान अधूरा है

परमारथ पहिचानि मति लसति बिषयँ लपटानि ।

निकसि चिता तें अधजरित मानहुँ सती परानि ॥
विषयासक्त साधुकी अपेक्षा वैराग्यवान् गृहस्थ अच्छा है
सीस उधारन किन कहेउ बरजि रहे प्रिय लोग ।
घरहीं सती कहावती जरती नाह बियोग ॥

साधुके लिये पूर्ण त्यागकी आवश्यकता

खरिया खरी कपूर सब उचित न पिय तिय त्याग ।
कै खरिया मोहि मेलि कै बिमल बिबेक बिराग ॥
भगवतप्रेममें आसक्ति बाधक है, गृहस्थाश्रम नहीं
घर कीन्हें घर जात है घर छोड़ि घर जाइ ।
तुलसी घर बन बीचहीं राम प्रेम पुर छाइ ॥

संतोषपूर्वक घरमें रहना उत्तम है

दिउँ पीठि पाछें लगे सनमुख होत पराइ ।
तुलसी संपति छाँह ज्यों लखि दिन बैठि गँवाइ ॥

विषयों की आशा ही दुःख का मूल है

तुलसी अद्भुत देवता आसा देवी नाम ।
सेएँ सोक समर्पई बिमुख भएँ अभिराम ॥

मोह-महिमा

सोई सेवर तेइ सुवा सेवत सदा बसंत ।
तुलसी महिमा मोह की सुनत सराहत संत ॥

विषय-सुखकी हेयता

करत न समुझत झूठ गुन सुनत होत मति रंक ।
पारद प्रगट प्रपंचमय सिद्धिउ नाउँ कलंक ॥

लोभकी प्रबलता

ग्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥

धन और ऐश्वर्यके मद तथा कामकी व्यापकता

श्रीमद बक्र न कीन्हि केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥

मायाकी फौज

ब्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड ॥

काम, क्रोध, लोभकी प्रबलता

तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ ॥

काम, क्रोध, लोभके सहायक

लोभ कें इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुष बचन बल मुनिबर कहहिं बिचारि ॥

मोहकी सेना

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महुँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ॥

अग्नि, समुद्र, प्रबल स्त्री और कालकी समानता

काह न पावक जाति सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥

स्त्री झगड़े और मृत्युकी जड़ है

जनमपत्रिका बरति कै देखहु मनहिं बिचारि ।
दारुन बैरी मीचु के बीच बिराजति नारि ॥

उद्धोधन

दीपसिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥

गृहासक्ति श्रीरघुनाथजीके स्वरूपके ज्ञानमें बाधक है

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे भव कूप ॥

काम-क्रोधादि एक-एक अनर्थकारक है फिर सबकी

तो बात ही क्या है

ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ॥

किसके मनको शान्ति नहीं मिलती ?

ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन विश्राम ।
भूत द्रोह रत मोहबस राम बिमुख रति काम ॥

ज्ञानमार्गकी कठिनता

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।
होइ धुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥

भगवद्भजनके अतिरिक्त और सब प्रयत्न व्यर्थ है

खल प्रबोध जग सोध मन को निरोध कुल सोध ।
करहिं ते फोटक पचि मरहिं सपनेहुँ सुख न सुबोध ॥

संतोषकी महिमा

सोरठा

कोउ विश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥

मायाकी प्रबलता और उसके तरनेका उपाय

सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥

गोस्वामीजीकी अनन्यता

दोहा

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।
एक राम धन स्याम हित चातक तुलसीदास ॥

प्रेमकी अनन्यताके लिये चातकका उदाहरण

जौ घन बरषै समय सिर जौ भरि जनम उदास ।
तुलसी या चित चातकहि तऊ तिहारी आस ॥

चातक तुलसी के मतें स्वातिहुँ पिऐ न पानि ।
प्रेम तृषा बाढ़ति भली घटें घटेगी आनि ॥
रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गे अंग ।
तुलसी चातक प्रेम को नित नूतन रुचि रंग ॥
चढ़त न चातक चित कबहुँ प्रिय पयोद के दोष ।
तुलसी प्रेम पयोधि की ताते नाप न जोख ॥
बरषि परुष पाहन पयद पंख करौ टुक टुक ।
तुलसी परी न चाहिऐ चतुर चातकहि चूक ॥
उपल बरसि गरजत तरजि डारत कुलिस कठोर ।

चितव कि चातक मेघ तजि कबहुँ दूसरी ओर ॥
पबि पाहन दामिनि गरज झरि झकोर खरि खीझि ।
रोष न प्रीतम दोष लखि तुलसी रागहि रीझि ॥
मान राखिबो माँगिबो पिय सों नित नव नेहु ।
तुलसी तीनिउ तब फबै जौ चातक मत लेहु ॥
तुलसी चातक ही फबै मान राखिबो प्रेम ।
बक्र बुंद लखि स्वातिहुँ निदरि निबाहत नेम ॥
तुलसी चातक माँगनो एक एक घन दानि ।
देत जो भू भाजन भरत लेत जो घूटक पानि ॥
तीनि लोक तिहुँ काल जस चातक ही के माथ ।
तुलसी जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ ॥
प्रीति पपीहा पयद की प्रगट नई पहिचानि ।
जाचक जगत कनाउड़ो कियो कनौड़ा दानि ॥
नहिं जाचत नहिं संग्रही सीस नाइ नहिं लेइ ।
ऐसे मानी मागनेहि को बारिद बिन देइ ॥
को को न ज्यायो जगत में जीवन दायक दानि ।
भयो कनौड़ो जाचकहि पयद प्रेम पहिचानि ॥
साधन साँसति सब सहत सबहि सुखद फल लाहु ।
तुलसी चातक जलद की रीझि बूझि बुध काहु ॥
चातक जीवन दायकहि जीवन समयँ सुरीति ।
तुलसी अलख न लखि परै चातक प्रीति प्रतीति ॥
जीव चराचर जहँ लगे है सब को हित मेहु ।
तुलसी चातक मन बस्यो घन सों सहज सनेह ॥
डोलत बिपुल बिहंग बन पिअत पोखरनि बारि ।
सुजस धवल चातक नवल तुही भुवन दस चारि ॥
मुख मीठे मानस मलिन कोकिल मोर चकोर ।
सुजस धवल चातक नवल रह्यो भुवन भरि तोर ॥
बास बेस बोलनि चलनि मानस मंजु मराल ।
तुलसी चातक प्रेम की कीरति बिसद बिसाल ॥
प्रेम न परखिअ परुषपन पयद सिखावन एह ।
जग कह चातक पातकी ऊसर बरसै मेह ॥
होइ न चातक पातकी जीवन दानि न मूढ़ ।
तुलसी गति प्रह्लाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़ ॥
गरज आपनी सबन को गरज करत उर आनि ।
तुलसी चातक चतुर भो जाचक जानि सुदानि ॥
चरग चंगु गत चातकहि नेम प्रेम की पीर ।
तुलसी परबस हाइ पर परिहैं पुहुमी नीर ॥
बध्यो बधिक पर्यो पुन्य जल उलटि उठाई चोंच ।
तुलसी चातक प्रेमपट मरतहुँ लगी न खोंच ॥
अंड फोरि कियो चेदुवा तुष पर्यो नीर निहारि ।
गहि चंगुल चातक चतुर डार्यो बाहिर बारि ॥
तुलसी चातक देत सिख सुतहि बारही बार ।
तात न तर्पन कीजिऐ बिना बारिधर धार ॥

सोरठा

जिअत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरहि ।
 सुरसरिहू को बारि मरत न माँगेउ अरध जल ॥
 सुनु रे तुलसीदास प्यास पपीहहि प्रेम की ।
 परिहरि चारिउ मास जौ अँचवै जल स्वाति को ॥
 जाचै बारह मास पिये पपीहा स्वाति जल ।
 जान्यो तुलसीदास जोगवत नेही नेह मन ॥

दोहा

तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पिआस ।
 पिअत स्वाति जल जान जग जाँचत बारह मास ॥
 आलबाल मुकुताहलनि हिय सनेह तरु मूल ।
 होइ हेतु चित चातकहि स्वाति सलिलु अनुकूल ॥
 उष्ण काल अरु देह खिन मन पंथी तन ऊख ।
 चातक बतियाँ न रुचीं अन जल सीचे रूख ॥
 अन जल सीचे रूख की छाया तें बरु घाम ।
 तुलसी चातक बहुत हैं यह प्रवीन को काम ॥
 एक अंग जो सनेहता निसि दिन चातक नेह ।
 तुलसी जासों हित लगै वहि अहार वहि देह ॥

एकाङ्गी अनुरागके अन्य उदाहरण

बिबि रसना तनु स्याम है बंक चलनि बिष खानि ।
 तुलसी जस श्रवननि सुन्यो सीस समरप्यो आनि ॥

मृगका उदाहरण

आपु ब्याध को रूप धरि कुहौ कुरंगहि राग ।
 तुलसी जो मृग मन मुरै परै प्रेम पट दाग ॥

सर्पका उदाहरण

तुलसी मनि निज दुति फनिहि ब्याधिहि देउ दिखाइ ।
 बिछुरत होइ नब आँधरो ताते प्रेम न जाइ ॥

कमलका उदाहरण

जरत तुहिन लखि बनज बन रबि दै पीठि पराउ ।
 उदय बिकस अथवत सकुच मिटै न सहज सुभाउ ॥

मच्छलीका उदाहरण

देउ आपनें हाथ जल मीनहि माहुर घोरि ।
 तुलसी जिऐ जो बारि बिनु तौ तु देहि कबि खोरि ॥
 मकर उरग दादुर कमठ जल जीवन जल गेह ।
 तुलसी एकै मीन को है साँचिलो सनेह ॥

मयूरशिखा बूटीका उदाहरण

तुलसी मिटे न मरि मिटेहुँ साँचो सहज सनेह ।
 मोरसिखा बिनु मूरिहुँ पलुहत गरजत मेह ॥
 सुलभ प्रीति प्रीतम सबै कहत करत सब कोइ ।
 तुलसी मीन पुनीत ते त्रिभुवन बड़ो न कोइ ॥

अनन्यताकी महिमा

तुलसी जप तप नेम व्रत सब सबहीं तें होइ ।
 लहै बड़ाई देवता इष्टदेव जब होइ ॥

गाढ़े दिनका मित्र ही मित्र है

कुदिन हितू सो हित सुदिन हित अनहित किन होइ ।
 ससि छबि हर रबि सदन तउ मित्र कहत सब कोइ ॥

बराबरीका स्नेह दुःखदायक होता है

कै लघुकै बड़ मीत भल सम सनेह दुख सोइ ।
 तुलसी ज्यो घृत मधु सरिस मिलें महाबिष होइ ॥

मित्रतामें छल बाधक है

मान्य मीत सों सुख चहैं सो न छुऐ छल छाहैं ।
 ससि त्रिसंकु कैकेइ गति लखि तुलसी मन माहैं ॥
 कहिअ कठिन कृत कोमलहुँ हित हठि होइ सहाइ ।
 पलक पानि पर ओड़िअत समुझि कुघाइ सुघाइ ॥

वैर और प्रेम अंधे होते है

तुलसी वैर सनेह दोउ रहित बिलोचन चारि ।
 सुरा सेवरा आदरहिं निंदहिं सुरसरि बारि ॥

दानी और याचकका स्वभाव

रुचै मागनेहि मागिबो तुलसी दानिहि दानु ।
 आलस अनख न आचरज प्रेम पिहानी जानु ॥

प्रेम और वैर ही अनुकूलता और प्रतिकूलतामें हेतु हैं

अमिअ गारि गारेउ गरल गारि कीन्ह करतार ।
 प्रेम वैर की जननि जुग जानहिं बुध न गवार ॥

स्मरण और प्रिय भाषण ही प्रेमकी निशानी है

सदा न जे सुमिरत रहहिं मिलि न कहहिं प्रिय बैन ।
ते पै तिन्ह के जाहिं घर जिन्ह के हिऐं न नैन ॥

स्वार्थ ही अच्छाई-बुराईका मानदण्ड हैं

हित पुनीत सब स्वार्थहिं अरि असुद्ध बिनु चाड़ ।
निज मुख मानिक सम दसन भूमि परे ते हाड़ ॥

संसारमें प्रेममार्गके अधिकारी बिरले ही हैं

माखी काक उलूक बक दादुर से भए लोग ।
भले ते सुक पिक मोरसे कोउ न प्रेम पथ जोग ॥

कलियुगमें कपटकी प्रधानता

हृदयँ कपट बर बेष धरि बचन कहहिं गढ़ि छोलि ।
अब के लोग मयूर ज्यों क्यों मिलिए मन खोलि ॥

कपट अन्ततक नहीं निभता

चरन चोंच लोचन रँगौ चलौ मराली चाल ।
छीर नीर बिबरन समय बक उधरत तेहि काल ॥

कुटिल मनुष्य अपनी कुटिलताको नहीं छोड़ सकता

मिलै जो सरलहि सरल है कुटिल न सहज बिहाइ ।
सो सहेतु ज्यों बक्र गति ब्याल न बिलहिं समाइ ॥
कृसधन सखहि न देव दुख मुएहुँ न मागव नीच ।
तुलसी सज्जन की रहनि पावकल पानी बीच ॥
संग सरल कुटिलहि भएँ हरि हर करहिं निबाहु ।
ग्रह गनती गनि चतुर विधि कियो उदर बिनु राहु ॥

स्वभावकी प्रधानता

नीच निचाई नहिं तजइ सज्जनहुँ के संग ।
तुलसी चंदन विटप बसि बिनु विष भए न भुअंग ॥
भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥
मिथ्या माहुर सज्जनहि खलहि गरल सम साँच ।
तुलसी छुअत पराइ ज्यों पारद पावक आँच ॥

सत्संग और असत्संगका परिणामगत भेद

संत संग अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहि संत कवि कोविद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥

सुकृत न सुकृती परिहरइ कपट न कपटी नीच ।
मरत सिखावन देइ चले गीधराज मारीच ॥

सज्जन और दुर्जनका भेद

सुजन सुतरु बन ऊख सम खल टंकिका रुखान ।
परहित अनहित लागि सब साँसति सहर समान ॥
पिअहि सुमन रस अलिल विटप काटि कोल फल खात ।
तुलसी तरुजीवी जुगल सुमति कुमति की बात ॥

अवसरकी प्रधानता

अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दिऐँ का लाख ।
दुइज न चंदा देखिए उदौ कहा भरि पाख ॥

भलाई करना बिरले ही जानते हैं

ग्यान अनभले को सबहि भले भलेहु काउ ।
सीग सँड़ रद लूम नख करत जीव जड़ घाउ ॥

संसारमें हित करनेवाले कम है

तुलसी जग जीवन अहित कतहुँ कोउ हित जानि ।
सोषक भानु कृसानु महि पवन एक धन दानि ॥
सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥
जलचर थलचर गगनचर देव दनुज नर नाग ।
उत्तम मध्यम अधम खल दस गुन बढ़त विभाग ॥
बलि मिस देखे देवता कर मिस मानव देव ।
मुए मार सुबिचार हत स्वार्थ साधन एव ॥
सुजन कहत भल पोच पथ पापि न परखइ भेद ।
करमनास सुरसरित मिस विधि निषेध बद वेद ॥

वस्तुही प्रधान है, आधार नहीं

मनि भाजन मधु पारई पूरन अमी निहारि ।
का छाँड़िअ का संग्रहिअ कहहु बिबेक बिचारि ॥

प्रीति और वैरकी तीन श्रेणियाँ

उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानि ।
प्रीति परिच्छा तिहुन की बैर बितिक्रम जानि ॥

जिसे सज्जन ग्रहण करते है,उसे दुर्जन त्याग देते हैं

पुन्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पाँच ।

लहहिं सुजन परिहरहिं खल सुनहु सिखावन साँच ॥

प्रकृतिके अनुसार व्यवहारका भेद भी आवश्यक हैं

नीच निरादरही सुखद आदर सुखद बिसाल ।
कदरी बदरी बिटप गति पेखहु पनस रसाल ॥

अपना आचरण सभी को अच्छा लगता है

तुलसी अपनो आचरण भलो न लागत कासु ।
तेहि न बसात जो खात नित लहसुनहू को बासु ॥

भाग्यवान् कौन है ?

बुध सो बिबेकी बिमलमति जिन्ह के रोष न राग ।
सुहद सराहत साधु जेहि तुलसी ताको भाग ॥

साधुजन किसकी सराहना करते है

आपु आपु कहँ सब भलो अपने कहँ कोइ कोइ ।
तुलसी सब कहँ जो भलो सुजन सराहिअ सोइ ॥

संगकी महिमा

तुलसी भलो सुसंग तें पोच कुसंगति सोइ ।
नाउ किंनरी तीर असि लोह बिलोकहु लोइ ॥
गुरु संगति गुरु होइ सो लघु संगति लघु नाम ।
चार पदारथ में गनै नरक द्वारहू काम ॥
तुलसी गुरु लघुता लहत लघु संगति परिनाम ।
देवी देव पुकारिअत नीच नारि नर नाम ॥
तुलसी किँ कुसंग धिति होहिं दाहिने बाम ।
कहि सुनि सकुचिअ सूम खल गत हरि संकर नाम ॥
बसि कुसंग चह सुजनता ताकी आस निरास ।
तीरथहू को नाम भो गया मगह के पास ॥
राम कृपाँ तुलसी सुलभ गंग सुसंग समान ।
जो जल परै जो जन मिलै कीजै आपु समान ॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जल लखहिं सुलच्छन लोग ॥
जनम जोग में जानिअत जग बिचित्र गति देखि ।
तुलसी आखर अंक रस रंग बिभेद बिसेषि ॥
आखर जोरि बिचार करु सुमति अंक लिखि लेखु ।
जोग कुजोग सुजोग मय जग गति समुझि बिसेषु ॥

मार्ग-भेदसे फल-भेद

करु बिचार चलु सुपथ भल आदि मध्य परिनाम ।

उलटि जपें 'जारा मरा' सूधें 'राजा राम' ॥

भलेके भला ही हो, यह नियम नहीं है

होइ भले के अनभलो होइ दानि के सूम ।
होइ कपूत सपूत कें ज्यों पावक में धूम ॥

विवेककी आवश्यकता

जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंक गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥

सोरठा

पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ।
कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्रान सम ॥

दोहा

जो जो जेहिं जेहिं रल मगन तहँ सो मुदित मन मानि ।
रसगुन दोष बिचारिबो रसिक रीति पहिचानि ॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥

कभी-कभी भलेको बुराई भी मिल जाती है

लोक बेदहू लौ दगो नाम भले को पोच ।
धर्मराज जम गाज पबि कहत सकोच न सोच ॥

सज्जन और दुर्जनकी परीक्षाके भिन्न-भिन्न प्रकार

बिरुचि परखिए सुजन जन राखि परखिए मंद ।
बड़वानल सोषत उदधि हरष बढ़ावत चंद ॥

नीच पुरुषकी नीचता

प्रभु सनमुख भाँ नीच नर होत निपट बिकराल ।
रबिरुख लखि दरपन फटिक उगिलत ज्वालाजाल ॥

सज्जनकी सज्जनता

प्रभु समीप गत सुजन जन होत सुखद सुबिचार ।
लवन जलधि जीवन जलद बरषत सुधा सुबारि ॥
नीच निरावहिं निरस तरु तुलसी सीचहिं ऊख ।
पोषत पयद समान सब विष पियूष के रूख ॥
बरषि बिस्व हरषित करत हरत ताप अघ प्यास ।

तुलसी दोष न जलद को जो जल जरै जवास ॥
अमर दानि जाचक मरहिं मरि मरि फिरि फिरि लेहिं ।
तुलसी जाचक पातकी दातहि दूषन देहिं ॥

नीचनिन्दा

लखि गयंद लै चलत भजि स्वान सुखानो हाड़ ।
गज गुन मोल अहार बल महिमा जान कि राड़ ॥

सज्जनमहिमा

कै निदरहुँ कै आदरहुँ सिंघहि स्वान सिआर ।
हरष बिषाद न केसरिहि कुंजर गंजनिहार ॥

दुर्जनोका स्वभाव

ठाढो द्वार न दै सकैं तुलसी जे नर नीच ।
निंदहि बलिल हरिचंद को का कियो करन दधीच ॥

नीचकी निन्दासे उत्तम पुरुषोंका कुछ नहीं घटता

ईस सीस बिलसत विमल तुलसी तरल तरंग ।
स्वान सरावग के कहैं लघुता लहै न गंग ॥
तुलसी देवल देव को लागे लाख करोरि ।
काक अभागें हगि भयों महिमा भई कि थोरि ॥

गुणोंका ही मूल्य है, दूसरोंके आदर-अनादरका नहीं

निज गुन घटत न नाग नग परखि परिहरत कोल ।
तुलसी प्रभु भूषन किए गुंजा बड़े न मोल ॥

श्रेष्ठ पुरुषोंकी महिमाको कोई नहीं पा सकता

राकापति षोड़स उअहिं तारा गन समुदाइ ।
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रवि राति न जाइ ॥

दुष्ट पुरुषोंद्वारा की हुई निन्दा-स्तुतिका कोई मूल्य नहीं है

भलो कहहिं बिनु जानेहुँ बिनु जानें अपबाद ।
ते नर गादुर जानि जियै करिय न हरष बिषाद ॥

डाह करनेवालोंका कभी कल्याण नहीं होता

पर सुख संपति देखि सुनि जरहिं जे जड़ बिनु आगि ।
तुलसी तिन के भागते चलै भलाई भागि ॥

दूसरोंकी निन्दा करनेवालोंका मुहँ काला होता है

तुलसी जे कीरति चहहिं पर की कीरति खोइ ।
तिनके मुहँ मसि लागिहैं मिटहि न मरिहै धोइ ॥

मिथ्या अभिमानका दुष्परिणाम

तन गुन धन महिमा धरम तेहि बिनु जेहि अभिमान ।
तुलसी जिअत बिडंबना परिनामहु गत जान ॥

नीचा बनकर रहना ही श्रेष्ठ है

सासु ससुर गुरु मातु पितु प्रभु भयो चहै सब कोइ ।
होनी दूजी ओर को सुजन सराहिअ सोइ ॥

सज्जन स्वाभाविक ही पूजनीय होते हैं

सठ सहि साँसति पति लहत सुजन कलेस न कायँ ।
गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिए गंडकि सिला सुभायँ ॥

भूप-दरबारकी निन्दा

बड़े विबुध दरबार तें भूमि भूप दरबार ।
जापक पूजत पेखिअत सहत निरादर भार ॥

छल-कपट सर्वत्र वर्जित है

बिनु प्रपंच छल भीख भलि लहिअ न दिऐँ कलेस ।
बावन बलि सों छल कियो दियो उचित उपदेस ॥
भलो भले सों छल किएँ जनम कनौड़ो होइ ।
श्रीपति सिर तुलसी लसति बलि बावन गति सोइ ॥
विबुध काज बावन बलिहि छलो भलो जिय जानि ।
प्रभुता तजि बस भे तदपि मन की गइ न गलानि ॥

जगत् में सब सीधोंको तंग करते हैं

सरल बक्र गति पंच ग्रह चपरि न चितवत काहु ।
तुलसी सूधे सूर ससि समय बिडंबित राहु ॥

दुष्ट-निन्दा

खल उपकार बिकार फल तुलसी जान जहान ।
मेढुक मर्कट बनिक बक्र कथा सत्य उपखान ॥
तुलसी खल बानी मधुर सुनि समुझिअ हियँ हेरि ।
राम राज बाधक भई मूढ़ मंधरा चेरि ॥
जोंक सूधि मन कुटिल गति खल बिपरीत बिचारु ।

अनहित सोनित सोष सो सो हित सोषनिहारु ॥
नीच गुड़ि ज्यों जानिबो सुनि लखि तुलसीदास ।
ढीलि दिऐँ गिरि परत महि खैचत चढत अकास ॥
भरदर बरसत कोस सत बचै जे बूँद बराइ ।
तुलसी तेउ खल बचन कर हुए गए न पराइ ॥
पेरत कोल्हू मेलि तिल तिली सनेही जानि ।
देखि प्रीति की रीति यह अब देखिबी रिसानि ॥
सहबासी काचो गिलहिं पुरजन पाक प्रवीन ।
कालछेप केहि मिलि करहिं तुलसी खग मृग मीन ॥
जासु भरोसैं सोइऐे राखि गोद में सीस ।
तुलसी तासु कुचाल तें रखवारो जगदीस ॥
मार खोज लै सौँह करि करि मत लाज न त्रास ।
मुए नीच ते मीच बिनु जे इन कें बिस्वास ॥
परद्रोही परदार रत परधन पर अपवाद ।
ते नर पावँर पापमय देह धरें मनुजाद ॥

कपटीको पहचानना बड़ा कठिन है

बचन बेष क्यों जानिए मन मलीन नर नारि ।
सूपनखा मृग पूतना दसमुख प्रमुख बिचारि ॥

कपटी से सदा डरना चाहिये

हँसनि मिलनि बोलनि मधुर कटु करतब मन माँह ।
छुवत जो सकुचइ सुमति सो तुलसी तिन्ह कि छाँह ॥

कपट ही दुष्टताका स्वरूप है

कपट सार सूची सहस बाँधि बचन परबास ।
कियो दुराउ चहौ चातुरीं सो सठ तुलसीदास ॥

कपटी कभी सुख नहीं पाता

बचन बिचार अचार तन मन करतब छल छूति ।
तुलसी क्यों सुख पाइऐे अंतरजामिहि धूति ॥
सारदूल को स्वाँग करि कूकर की करतूति ।
तुलसी तापर चाहिऐे कीरति बिजय बिभूति ॥

पाप ही दुःखका मूल है

बड़े पाप बाढ़े किए छोटे किए लजात ।
तुलसी ता पर सुख चहत बिधि सों बहुत रिसात ॥

अविवेक ही दुःखका मूल है

देस काल करता करम बचन बिचार बिहीन ।

ते सुरतरु तर दारिदी सुरसरि तीर मलीन ॥
साहस ही कै कोप बस किएँ कठिन परिपाक ।
सठ संकट भाजन भए हठि कुजाति कपि काक ॥
राज करत बिनु काजहीं करहिं कुचालि कुसाजि ।
तुलसी ते दसकंध ज्यों जइहै सहित समाज ॥
राज करत बिनु काजहीं ठटहिं जे कूर कुठाट ।
तुलसी ते कुरुराज ज्यों जइहै बारह बाट ॥

विपरीत बुद्धि बिनाशका लक्षण है

सभा सुयोधन की सकुनि सुमति सराहन जोग ।
द्रोन बिदुर भीषम हरिहि कहहिं प्रपंची लोग ॥
पांडु सुअन की सदसि ते नीको रिपु हित जानि ।
हरि हर सम सब मानिअत मोह ग्यान की बानि ॥
हित पर बढइ बिरोध जब अनहित पर अनुराग ।
राम बिमुख बिधि बाम गति सगुन अघाइ अभाग ॥
सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥

जोशमें आकर अनधिकार कार्य करनेवाला पछताता है

भरुहाए नट भाँट के चपरि चढ़े संग्राम ।
कै वै भाजे आइहै के बाँधे परिनाम ॥

समयपर कष्ट सह लेना हितकर होता है

लोक रीति फूटी सहहिं आँजी सहइ न कोइ ।
तुलसी जो आँजी सहइ सो आँधरो न होइ ॥

भगवान् सबके रक्षक है

भागें भल ओडेहुँ भलो भलो न घालें घाउ ।
तुलसी सब के सीस पर रखवारो रघुराउ ॥

लड़ना सर्वथा त्याज्य है

सुमति बिचारहिं परिहरहिं दल सुमनहुँ संग्राम ।
सकुल गए तनु बिनु भए साखी जादौ काम ॥
ऊलह न जानब छोटे करि कलह कठिन परिनाम ।
लगति अग्नि लघु नीच गृह जरत धनिक धन धाम ॥

क्षमाका महत्व

छमा रोष के दोष गुन सुनि मनु मानहिं सीख ।
अबिचल श्रीपति हरि भए भूसुर लहै न भीख ॥
कौरव पांडव जानिए क्रोध छमा के सीम ।

पाँचहि मारि न सौ सके सयौ सँघारे भीम ॥

क्रोधकी अपेक्षा प्रेमके द्वारा वश करना ही जीत है

बोल न मोटे मारिऐ मोटी रोटी मारु ।
जीति सहस सम हारिबो जीतें हारि निहारु ॥
जो परि पायँ मनाइए तासों रूठि बिचारि ।
तुलसी तहाँ न जीतिऐ जहँ जीतेहुँ हारि ॥
जूझे ते भल बूझिबो भली जीति तें हार ।
डहकें तें डहकाइबो भलो जो करिअ बिचार ॥
जा रिपु सों हारेहुँ हँसी जिते पाप परितापु ।
तासों रारि निवारिऐ समयँ सँभारिअ आपु ॥
जो मधु मरै न मारिऐ माहुर देइ सो काउ ।
जग जिति हारे परसुधर हारि जिते रघुराउ ॥
बैर मूल हर हित बचन प्रेम मूल उपकार ।
दो हा सुभ संदोह सो तुलसी किँ बिचार ॥
रोष न रसना खोलिऐ बरु खोलिअ तरवारि ।
सुनत मधुर परिनाम हित बोलिअ बचन बिचारि ॥
मधुर बचन कटु बोलिबो बिनु श्रम भाग अभाग ।
कुहू कुहू कलकंठ रव का का कररत काग ॥
पेट न फूलत बिनु कहें कहत न लागइ ढेर ।
सुमति बिचारें बोलिऐ समुझि कुफेर सुफेर ॥

वीतराग पुरुषोंकी शरण ही जगत् के जंजालसे बचनेका उपाय है

छिद्यो न तरुनि कटाच्छ सर करेउ न कठिन सनेहु ।
तुलसी तिन की देह को जगत कवच करि लेहु ॥

शूरवीर करनी करते है, कहते नहीं

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

अभिमान के बचन कहना अच्छा नहीं

बचन कहे अभिमान के पारथ पेखत सेतु ।
प्रभु तिय लूटत नीच भर जय न मीचु तेहिं हेतु ॥

दीनोंकी रक्षा करनेवाला सदा विजयी होता है

राम लखन बिजई भए बनहुँ गरीब निवाज ।
मुखर बालि रावन गए घरहीं सहित समाज ॥

नीतिका पालन करनेवालेके सभी सहायक बन जाते हैं

खग मृग मीत पुनीत किय बनहुँ राम नयपाल ।

कुमति बालि दसकंठ घर सुहद बंधु कियो काल ॥

सराहनेयोग्य कौन है

लखइ अघानो भूख ज्यों लखइ जीतिमें हारि ।
तुलसी सुमति सराहिऐ मग पग धरइ बिचारि ॥

अवसर चूक जानेसे बड़ी हानि होती है

लाभ समय को पालिबो हानि समय की चूक ।
सदा बिचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक ॥

समयका महत्व

सिंधु तरन कपि गिरि हरन काज साइँ हित दोउ ।
तुलसी समयहिं सब बड़ो बूझत कहूँ कोउ कोउ ॥

तुलसी मीठी अमी तें मागी मिलै जो मीच ।
सुधा सुधाकर समय बिनु काललकूट तें नीच ॥

विपत्तिकालके मित्र कौन है ?

तुलसी असमय के सखा धीरज धरम बिबेक ।
साहित साहस सत्यव्रत राम भरोसो एक ॥
समरथ कोउ न राम सों तीय हरन अपराधु ।
समयहिं साधे काज सब समय सराहिं साधु ॥
तुलसी तीरहु के चलें समय पाइबी थाह ।
धाइज न जाइ थहाइबी सर सरिता अवगाह ॥

होनहारकी प्रबलता

तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ ।
आपुनु आवइ ताहि पै ताहि तहाँ लै जाइ ॥

परमार्थप्राप्तिके चार उपाय

कै जूझीबो कै बूझिबो दान कि काय कलेस ।
चारि चारु परलोक पथ जथा जोग उपदेस ॥

विवेककी आवश्यकता

पात पात को सीचिबो न करु सरग तरु हेत ।
कुटिल कटुक फर फरैगो तुलसी करत अचेत ॥

विश्वासकी महिमा

गठिबंध ते परतीति बड़ि जेहिं सबको सब काज ।
कहब थोर समुझब बहुत गाड़े बढत अनाज ॥
अपनो ऐपन निज हथा तिय पूजहिं निज भीति ।
फरइ सकल मन कामना तुलसी प्रीति प्रतीति ॥
बरषत करषत आपु जल हरषत अरघनि भानु ।
तुलसी चाहत साधु सुर सब सनेह सनमानु ॥

बारह नक्षत्र व्यापारके लिये अच्छे हैं

श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग हर रेवती सखाउ ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुं न जाइहि काउ ॥

चौदह नक्षत्रोंमें हाथसे गया हुआ धन वापस नहीं मिलता

ऊगुन पूगुन बि अज कृ म आ भ अ मू गुनु साथ ।
हरो धरो गाड़ो दियो धन फिरि चढ़इ न हाथ ॥

कौन-सी तिथियाँ कब हानिकारक होती हैं ?

रबि हर दिसि गुन रस नयन मुनि प्रथमादिक बार ।
तिथि सब काज नसावनी होइ कुजोग विचार ॥

कौन-सा चन्द्रमा घातक समझना चाहिये ?

ससि सर नव दुइ छ दस गुन मुनि फल बसु हर भानु ।
मेषादिक क्रम तें गनहिं घात चंद्र जियँ जानु ॥

किन-किन वस्तुओंका दर्शन शुभ है ?

नकुल सुदरसनु दरसनी छेमकरी चक चाष ।
दस दिसि देखत सगुन सुभ पूजहिं मन अभिलाष ॥

सात वस्तुएँ सदा मङ्गलकारी हैं

सुधा साधु सुरतरु सुमन सुफल सुहावनि बात ।
तुलसी सीतापति भगति सगुन सुमंगल सात ॥

श्रीरघुनाथजीका स्मरण सारे मङ्गलोंकी जड़ है

भरत सत्रुसूदन लखन सहित सुमिरि रघुनाथ ।
करहु काज सुभ साज सब मिलिहि सुमंगल साथ ॥

यात्राके समयका शुभ स्मरण

राम लखन कौसिक सहित सुमिरहु करहु पयान ।

लच्छि लाभ लै जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥

वेदकी अपार महिमा

अतुलित महिमा वेद की तुलसी किँ विचार ।
जो निंदत निंदित भयो बिदित बुद्ध अवतार ॥
बुध किसान सर वेद निज मतेँ खेत सब सींच ।
तुलसी कृषि लखि जानिबो उत्तम मध्यम नीच ॥

धर्मका परित्याग किसी भी हालतमें नहीं करना चाहिये

सहि कुबोल साँसति सकल अँगइ अनट अपमान ।
तुलसी धरम न परिहरिअ कहि करि गए सुजान ॥

दूसरेका हित ही करना चाहिये, अहित नहीं

अनहित भय परहित किँ पर अनहित हित हानि ।
तुलसी चारु बिचारु भल करिअ काज सुनि जानि ॥

प्रत्येक कार्यकी सिद्धिमें तीन सहायक होते हैं

पुरुषारथ पूरब करम परमेस्वर परधान ।
तुलसी पैरत सरित ज्यों सबहिं काज अनुमान ॥

नीतिका अवलम्बन और श्रीरामजीके चरणोंमें प्रेम ही श्रेष्ठ है

चलब नीति मग राम पग नेह निबाहब नीक ।
तुलसी पहिरिअ सो बसन जो न पखारें फीक ॥
दोहा चारु बिचारु चलु परिहरि बाद विवाद ।
सुकृत सीवँ स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद ॥

विवेकपूर्वक व्यवहार ही उत्तम है

तुलसी सो समरथ सुमति सुकृती साधु सयान ।
जो बिचारि व्यवहरइ जग खरच लाभ अनुमान ॥
जाय जोग जग छेम विनु तुलसी के हित राखि ।
विनुऽपराध भृगुपति नहुष बेनु बृकासुर साखि ॥

नेमसे प्रेम बड़ा है

बड़ि प्रतीति गठिबंध तें बड़ो जोग तें छेम ।
बड़ो सुसेवक साइँ तें बड़ो नेम तें प्रेम ॥

किस-किसका परित्याग कर देना चाहिये

सिष्य सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन साँच ।

सुनि समुझिअ पुनि परिहरिअ पर मन रंजन पाँच ॥

सात वस्तुओंको रस बिगड़नेके पहले ही छोड़ देना चाहिये

नगर नारि भोजन सचिव सेवक सखा अगार ।
सरस परिहरें रंग रस निरस बिषाद बिकार ॥

मनके चार कण्टक हैं

तूठहिं निज रुचि काज करि रूठहिं काज बिगारि ।
तीय तनय सेवक सखा मन के कंटक चारि ॥

कौन निरादर पाते हैं ?

दीरघ रोगी दारिदी कटुबच लोलुप लोग ।
तुलसी प्रान समान तउ होहिं निरादर जोग ॥

पाँच दुःखदायी होते है

पाही खेती लगन बट रिन कुव्याज मग खेत ।
वैर बड़े सों आपने किए पाँच दुख हेत ॥

समर्थ पापीके वैर करना उचित नहीं

धाइ लगै लोहा ललकि खैंचि लेइ नइ नीचु ।
समरथ पापी सों बयर जानि बिसाही मीचु ॥

शोचनीय कौन है

सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग ॥

परमार्थसे विमुख ही अंधा है

तुलसी स्वारथ सामुहो परमारथ तन पीठि ।
अंध कहें दुख पाइहै डिठिआरो केहि डीठि ॥

मनुष्य आँख होते हुए भी मृत्युको नहीं देखते

बिन आँखिन की पानहीं पहिचानत लखि पाय ।
चारि नयन के नारि नर सूझत मीचु न माय ॥

मूढ़ उपदेश नहीं सुनते

जौ पै मूढ़ उपदेस के होते जोग जहान ।
क्यों न सुजोधन बोध कै आए स्याम सुजान ॥

सोरठा

फुलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरुख हृदयँ न चेत जौ गुर मिलहिं विरंचि सम ॥

दोहा

रीझि आपनी बूझि पर खीझि बिचार विहीन ।
ते उपदेस न मानहीं मोह महोदधि मीन ॥

बार-बार सोचनेकी आवश्यकता

अनसमुझें अनुसोचनो अवसि समुझिए आपु ।
तुलसी आपु न समुझिए पल पल पर परितापु ॥

मूर्खशिरोमणि कौन हैं ?

कूप खनत मंदिर जरत आएँ धारि बबूर ।
बवहिं नवहिं निज काज सिर कुमति सिरमनि कूर ॥

ईश्वरविमुखकी दुर्गति ही होती है

निडर ईस तें बीस कै बीस बाहु सो होइ ।
गयो गयो कहैं सुमति सब भयो कुमति कह कोइ ॥

जान-बूझकर अनीति करनेवालेको उपदेश देना व्यर्थ हैं

जो सुनि समुझि अनीति रत जागत रहे जु सोइ ।
उपदेसिबो जगाइबो तुलसी उचित न होइ ॥
बहु सुत बहु रुचि बहु वचन बहु अचार व्यवहार ।
इनको भलो मनाइबो यह अग्यान अपार ॥

जगत् के लोगोंको रिझानेवाला मूर्ख हैं

लोगनि भलो मनाव जो भलो होन की आस ।
करत गगन को गेंडुँआ सो सठ तुलसीदास ॥
अपजस जोग कि जानकी मनि चोरी की कान्ह ।
तुलसी लोग रिझाइबो करषि कातिबो नान्ह ॥
तुलसी जु पै गुमान को होतो कछु उपाउ ।
तौ कि जानकिहि जानि जियँ परिहरते रघुराउ ॥

प्रतिष्ठा दुःखका मूल है

मागि मधुकरी खात ते सोवत गोड़ पसारि ।
पाप प्रतिष्ठा बढि परी ताते बाढ़ी रारि ॥

तुलसी भेड़ी की धँसनि जड़ जनता सनमान ।
उपजत ही अभिमान भो खोवत मूढ़ अपान ॥

भेड़ियाधँसानका उदाहरण

लही आँखि कब आँधरे बाँझ पूत कब ल्याइ ।
कब कोढ़ी काया लही जग बहराइच जाइ ॥

ऐश्वर्य पाकर मनुष्य अपनेको निडर मान बैठते हैं

तुलसी निरभय होत नर सुनिअत सुरपुर जाइ ।
सो गति लखि व्रत अछत तनु सुख संपति गति पाइ ॥
तुलसी तोरत तीर तरु बक हित हंस बिडारि ।
बिगत नलिन अलि मलिन जल सुरसरिहू बढिआरि ॥
अधिकरी बस औसरा भलेउ जानिबे मंद ।
सुधा सदन बसु बारहें चउथें चउथिउ चंद ॥

नौकर स्वामीकी अपेक्षा अधिक अत्याचारी होते है

त्रिबिध एक बिधि प्रभु अनुग अवसर करहिं कुठाट ।
सूधे टेढ़े सम विषम सब महँ वारहवाट ॥
प्रभु तें प्रभु गन दुखद लखि प्रजहिं सँभारै राउ ।
कर तें होत कृपानको कठिन घोर घन घाउ ॥
ब्यालहु तें बिकराल बड़ ब्यालफेन जियँ जानु ।
वहि के खाए मरत है वहि खाए बिनु प्रानु ॥
कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥
काल बिलोकत ईस रुख भानु काल अनुहारि ॥
रबिहि राउ राजहिं प्रजा बुध ब्यवहरहिं बिचारि ॥
जथा अमल पावन पवन पाइ कुसंग सुसंग ।
कहिअ कुबास सुबास तिमि काल महीस प्रसंग ॥
भलेहु चलत पथ पोच भय नृप नियोग नय नेम ।
सुतिय सुभूपति भूषिअत लोह सँवारित हेम ॥

राजाको कैसा होना चाहिये ?

माली भानु किसान सम नीति निपुन नरपाल ।
प्रजा भाग बस होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल ॥
बरषत हरषत लोग सब करषत लखै न कोइ ।
तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होइ ॥

राजनीति

सुधा सुजान कुजान फल आम असन सम जानि ।
सुप्रभु प्रजा हित लेहिं कर सामादिक अनुमानि ॥
पाके पकए बिटप दल उत्तम मध्यम नीच ।

फल नर लहैं नरेस त्यों करि बिचारि मन बीच ॥
रीझि खीझि गुरु देत सिख सखा सुसाहिब साधु ।
तोरि खाइ फल होइ भल तरु काटें अपराधु ॥

धरनि धेनु चारितु चरत प्रजा सुबच्छ पेन्हाइ ।
हाथ कछु नहिं लागिहै किऐँ गोड़ कि गाइ ॥
चढ़े बधूरें चंग ज्यों ग्यान ज्यों सोक समाज ।
करम धरम सुख संपदा त्यों जानिबे कुराज ॥
कंटक करि करि परत गिरि साखा सहस खजूरि ।
मरहिं कृनृप करि करि कुनय सों कुचालि भव भूरि ॥
काल तोपची तुपक महि दारू अनय कराल ।
पाप पलीता कठिन गुरु गोला पुहुमी पाल ॥

किसका राज्य अचल हो जाता है ?

भूमि रुचिर रावन सभा अंगद पद महिपाल ।
धरम राम नय सीय बल अचल होत सुभ काल ॥
प्रीति राम पद नीति रति धरम प्रतीति सुभायँ ।
प्रभुहि न प्रभुता परिहरै कबहुँ बचन मन कायँ ॥
कर के कर मन के मनहिं बचन बचन गुन जानि ।
भूपहि भूलि न परिहरै बिजय बिभूति सयानि ॥
गोली बान सुमंत्र सर समुझि उलटि मन देखु ।
उत्तम मध्यम नीच प्रभु बचन बिचारि बिसेषु ॥
सत्रु सयानो सलिल ज्यों राख सीस रिपु नाव ।
बूड़त लखि पग डगत लखि चपरि चहूँ दिसि घाव ॥
रैअत राज समाज घर तन धन धरम सुबाहु ।
सांत सुसचिवन सौँपि सुख बिलसइ नित नरनाहु ॥
मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥
सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोइ ॥
सचिव बैद गुर तीनि जौँ प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनी कर होइ बेगिहीं नास ॥
रसना मन्त्री दसन जन तोष पोष निज काज ।
प्रभु कर सेन पदादिका बालक राज समाज ॥
लकड़ी डौआ करछुली सरस काज अनुहारि ।
सुप्रभु संग्रहहिं परिहरहिं सेवक सखा बिचारि ॥
प्रभु समीप छोटे बड़े रहत निबल बलवान ।
तुलसी प्रगट बिलोकिए कर अँगुली अनुमान ॥

आज्ञाकारी सेवक स्वामी से बड़ा होता है

साहब तें सेवक बड़ो जो निज धरम सुजान ।
राम बाँधि उतरे उदधि लाँधि गए हनुमान ॥

मूलके अनुसार बढ़नेवाला और बिना अभिमान किये

सबको सुख देनेवाला पुरुष ही श्रेष्ठ है

तुलसी भल बरतरु बढ़त निज मूलहिं अनुकुल ।
सबहि भाँति सब कहँ सुखद दलनि फलनि बिनु फूल ॥

त्रिभुवनके दीप कौन है ?

सधन सगुन सधरम सगन सबल सुसाइँ महीप ।
तुलसी जे अभिमान बिनु ते त्रिभुवन के दीप ॥

कीर्ति करतूतिसे ही होती है

तुलसी निज करतूति बिनु मुकुत जात जब कोइ ।
गयो अजामिल लोक हरि नाम सक्यो नहिं धोइ ॥

बड़ो का आश्रय भी मनुष्यको बड़ा बना देता है

बड़ो गहे ते होत बड़ ज्यो बावन कर दंड ।
श्रीप्रभु के संग सों बड़ो गयो अखिल ब्रह्मंड ॥

कपटी दानीकी दुर्गति

तुलसी दान जो देत हैं जल में हाथ उठाइ ।
प्रतिग्राही जीवै नहीं दाता नरकै जाइ ॥

अपने लोगोंके छोड़ देनेपर सभी वैरी हो जाते है

आपन छोड़ो साथ जब ता दिन हितू न कोइ ।
तुलसी अंबुज अंबु बिनु तरनि तासु रिपु होइ ॥

साधनसे मनुष्य ऊपर उठता है और साधन बिना गिर जाता है

उरबी परि कलहीन होइ ऊपर कलाप्रधान ।
तुलसी देखु कलाप गति साधन घन पहिचान ॥

सज्जनोको दुष्टोंका संग भी मङ्गलदायक होता है

तुलसी संगति पोच की सुजनहि होति म-दानि ।
ज्यो हरि रूप सुताहि तें कीनि गोहारि आनि ॥

कलियुगमें कुटिलताकी वृद्धि

कलि कुचालि सुभ मति हरनि सरलै दंडै चक्र ।
तुलसी यह निहचय भई बाढ़ि लेति नव बक्र ॥

आपसमें मेल रखना उत्तम है

गो खग खे खग बारि खग तीनों माहिं बिसेक ।
तुलसी पीवै फिरि चलै रहैं फिरै संग एक ॥

सब समय समतामे स्थित रहनेवाले पुरुष ही श्रेष्ठ हैं

साधन समय सुसिद्धि लहि उभय मूल अनुकूल ।
तुलसी तीनिउ समय सम ते महि मंगल मूल ॥

जीवन किनका सफल है ?

मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ॥

पिताकी आज्ञाका पालन सुखका मूल है

अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥

स्त्रीके लिये पतिसेवा ही कल्याणदायिनी है

सोरठा

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥

शरणागतका त्याग पापका मूल है

दोहा

सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँ पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि ॥
तुलसी तून जलकूल को निरबल निपट निकाज ।
कै राखे कै संग चलै बाँह गहे की लाज ॥

कलियुगका वर्णन

रामायन अनुहरत सिख जग भयो भारत रीति ।
तुलसी सठ की को सुनै कलि कुचालि पर प्रीति ॥

पात पात कै सीचिबो बरी बरी कै लोन ।
तुलसी खोटें चतुरपन कलि डहके कहु को न ॥
प्रीति सगाई सकल विधि बनिज उपायँ अनेक ।
कल बल छल कलि मल मलिन डहकत एकहि एक ॥
दंभ सहित कलि धरम सब छल समेत व्यवहार ।
स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥
चोर चतुर बटमार नट प्रभु प्रिय भँडुआ भंड ।
सब भच्छक परमारथी कलि सुपंथ पाषंड ॥
असुभ बेष भूषण धरें भच्छाभच्छ जे खाहीं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥

सोरठा

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।
मन क्रम बचन लवार ते बकता कलिकाल महुँ ॥

दोहा

ब्रह्मग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं विप्र गुर घात ॥
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।
जानइ ब्रह्म सो विप्रवर आँखि देखावहिं डाटि ॥
साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखान ।
भगति निरूपहिं भगत कलि निंदहिं बेद पुरान ॥
श्रुति संमत हरिभगति पथ संजुत बिरति बिबेक ।
तेहि परिहरिहिं बिमोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥
सकल धरम बिपरीत कलि कल्पित कोटि कुपंथ ।
पुन्य पराय पहार बन दुरे पुरान सुग्रन्थ ॥
धातुवाद निरुपाधि बर सद्गुरु लाभ सुमीत ।
देव दरस कलिकाल में पोथिन दुरे समीत ॥
सुर सदननि तीरथ पुरिन निपट कुचालि कुसाज ।
मनहुँ मवा से मारि कलि राजत सहित समाज ॥
गौड़ गवार नृपाल महि जमन महा महिपाल ।
साम न दान न भेद कलि केवल दंड कराल ॥
फोरहिं सिल लोढा सदन लागें अढुक पहार ।
कायर कूर कुपूत कलि घष घर सहस डहार ॥
प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।
जेन केन बिधि दीन्हे दान करइ कल्याण ॥
कलिजुग सम जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास ।
गाइ राम गुन गन विमल भव तर विनहिं प्रयास ॥

और चाहे जो भी घट जाय,
भगवान् से प्रेम नहीं घटना चाहिये

श्रवन घटहुँ पुनि दूग घटहुँ घटउ सकल बल देह ।
इते घटें घटिहै कहा जौ न घटै हरिनेह ॥

कुसमयका प्रभाव

तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन ।
अब तो दादुर बोलिहैं हमें पूछिहै कौन ॥

श्रीरामजीके गुणोंकी महिमा

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईधन अनल प्रचंड ॥

कलियुगमें दो ही आधार है

सोरठा

कलि पाषंड प्रचार प्रबल पाप पावँर पतित ।
तुलसी उभय अधार राम नाम सुरसरि सलिल ॥

भगवत्प्रेम ही सब मङ्गलोंकी खान है

दोहा

रामचंद्र मुख चंद्रमा चित चकोर जब होइ ।
राम राज सब काज सुभ समय सुहावन सोइ ॥
बीज राम गुन गन नयन जल अंकुर पुलकालि ।
सुकृती सुतन सुखेत बर बिलसत तुलसी सालि ॥
तुलसी सहित सनेह नित सुमिरहु सीता राम ।
सगुन सुमंगल सुभ सदा आदि मध्य परिनाम ॥
पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिनाम ।
सुलभ सिद्धि सब साहिबी सुमिरत सीता राम ॥

दोहावलीके दोहोंकी महिमा

मनिमय दोहा दीप जहँ उर घर प्रगट प्रकास ।
तहँ न मोह तम भय तमी कलि कज्जली बिलास ॥
का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये साँच ।
काम जु आवै कामरी का लै करिअ कुमाच ॥

रामकी दीनबन्धुता

मनि मानिक महुँगे किए सहुँगे तून जल नाज ।
तुलसी एते जानिये राम गरीब नेवाज ॥

॥ इति ॥

The texts by Goswami Tulasidas were encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam. The files were converted to ITRANS 5.21 encoding for creating this version.

Please contact the following for additional details:

Vineet Chaitanya
vc@iiit.net
<http://www.iiit.net>

Avinash Chopde
avinash@acm.org
<http://www.aczone.com/>

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated October 27, 2000